International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 4 Ser. 1 || April 2019 || PP 79-82

श्रीमद्भगवतगीता की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. वीरेन्द्र कुमार जोशी
व्याख्याता संस्कृत
गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय
अलवर

कृष्णं वन्दे जगद्गुरूम् संसार के गुरू भगवान श्री कृष्ण के श्री मुख से निःसृत परम सहस्यमयी दिव्य वाणी श्रीमद्भगवदगीता है । गुरु के गुरुत्तर दायित्व का निर्वहण करते हुऐ स्वयं भगवान ने अर्जुन को निमित्त बनाकर मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए उपदेश दिया है । इस ग्रन्थ में भगवान श्री कृष्ण ने ह्रदय के बहुत ही विलक्षण भाव भर दिये हैं ।

श्री मद्भगवदगीता की महिमा अगाध और असीम है। इसका प्रभाव देशकाल की सीमाओं में आबद्ध नही है । गीता का सन्देश जिस प्रकार महाभारत के पूर्व प्रासंगिक था , उसी प्रकार वह आज भी है । जब युद्ध के लिए सन्नद्ध सेनाएँ आमने–सामने खड़ी हो , ऐसे अवसर पर अर्जुन का युद्ध से विमुख होना किसी भी प्रकार वीरोचित नही कहा जा सकता । अर्जुन को कर्तव्य पालन रूप युद्ध में प्रवृत्त करने हेतु श्री कृष्ण ने मोह, अज्ञान को दूर करने के लिए जो उपदेश दिया वह आज भी हमारे लिए दिग्दर्शक का कार्य कर सकता है । गीता में वर्णित निष्काम कर्मयोग , समत्व की भावना मन वाणी व शरीर से प्राणी मात्र को पीड़ित न करना , अन्तःकरण की पवित्रता , इन्द्रियों का दमन आदि विषय आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने प्राचीन काल में थे। गीता के उपदेश राष्ट्र की अभिवृद्धि में सहायक हैं । गीता में भगवान श्री कृष्ण नेतृत्व गुरू हैं । इस सम्पूर्ण संसार के भर्त्ता , प्रभु अविनाशी श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्त्तव्य परायणता तथा संशयात्मक बुद्धि से परे युद्ध भूमि पर डटे रहने की शिक्षा दी । वहीं दूसरी ओर ज्ञान तथा भक्ति मार्ग को मानव मात्र के कल्याण का सर्वश्रेष्ठ पथ बताकर तीनों योगों की महत्ता को स्पष्ट किया है ।

मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए दर्शनशास्त्र में तीन मार्ग 'प्रस्थानत्रय' के नाम से प्रसिद्ध है उपनिषद् – ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता। उपनिषद मन्त्रात्मक हैं , ब्रह्मसूत्र में सूत्र हैं तथा भगवद्गीता में श्लोक हैं । भगवदगीता में श्लोक होते हुऐ भी भगवान् की वाणी होने से मन्त्र ही हैं। इन श्लोकों में बहुत गहरा अर्थ भरा होने से इनको सूत्र भी कह सकते हैं । उपनिषद तो केवल अधिकारी मनुष्यों के लिए , ब्रह्मसूत्र विद्वानों के लिए , किन्तु श्रीमद्भगवदगीता सभी के लिए उपयोगी पठनीय एवं करणीय है ।

श्रीमद्भगवदगीता वर्तमान में हमारी सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है । इसमें साधक के लिए उपयोगी सामग्री है , चाहे वह किसी भी देश का , किसी भी वेश का , किसी समुदाय का , किसी भी वर्ण का व्यक्ति क्यों न हो। इसमें किसी भी वर्ग विशेष की निन्दा या प्रशंसा नही है । अपितु वास्तविक तत्त्व का ही वर्णन है। आज अनेक प्रकार की समस्याओं के मूल में अकर्मण्यता है । गीता में कर्मफल का त्याग कर कर्त्तव्य बुद्धि से कार्य करने की प्रेरणा दी है । यदि सभी व्यक्ति अपने–अपने कर्त्तव्य का पालन करने लगे तो हमारी अधिकांश समस्याओं का समाधान अनायास ही हो जायेगा । कर्त्तव्य पालन से पुरूषार्थी अपने जीवन में निरन्तर सफलता, उच्चता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है–

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।

कर्म करके प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्तः करण में सुख की सांस लेता है । बिना कर्म किये तो वह प्रमादी , अथवा रोगी होकर अपने शरीर को नष्ट कर लेता है । कर्म के बिना तो किसी भी प्राणी की जीविका (शरीर यात्रा) भी नही चल सकती –

शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मण ।

अतः गीता उपनिषद् वाक्य

कुर्वन्नेह कर्माणि जिजिविषेच्छतं समाः

की प्रतिष्ठा करते हुऐ कहती है –

कर्मण्येवाकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ।।

आज हमें निष्काम कर्मयोग की भावना की बहुत आवश्यकता है । क्योंकि जो भी हम कर्म करें निष्काम होकर ही करें –

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्यसि ।।

निष्काम कर्म से हम लोभ , अनुचित प्रयास , दुःख , अप्रसन्नता , भ्रष्टाचार और पथभ्रष्ट होने से बच जाएंगे ।

स्वधर्मानुसार अपने कर्त्तव्य का पालन बहुत बड़े पाप , अत्याचार , पतन से बचा लेता है एवं परिणाम में कल्याण कारक होता है । संसार में जितने भी दुःख , शोक , चिन्ता आदि हैं वे सब परधर्म का आश्रय लेने से हैं परधर्म बाहर से देखने में गुण सम्पन्न , पालन में सुगम्य , एवं वैभव , सुख – सुविधा , मान सम्मान से युक्त दिखाई पड़ता है , किन्तु उसका पालन भयावह है । अतः परधर्म का आश्रय छोड़कर स्वधर्म का पालन करना चाहिए : क्योकि इससे ही सर्वदा रहने वाले आनन्द की प्राप्ति होती है –

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मोत्स्वनुतिष्ठतात् ।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।।

आज जबकि नैतिक और सामाजिक मूल्य निरन्तर बिखर रहे हैं । ऐसी परिस्थिति में परिवार , समाज , देश और विश्व के हित के लिए गीता ने साहचर्य मूल्य की प्रतिष्ठा की है –

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः

अधापुरिन्द्रियारामों मोधं पार्थ सं जीवति ।।

अर्थात् हे पार्थ ! जो पुरूष इस लोक में इस प्रकार चलाये हुऐ सृष्टि चक्र के अनुसार नही चलता , शास्त्र विहित कर्मों को नहीं करता , वह इन्द्रियों के सुख को भोगने वाला , पाप – आयु पुरूष व्यर्थ ही जीता है ।

भगवान के यहाँ तो सभी आत्मोत्थान के लिए बिना भेद – भाव के जा सकते हैं । गीता का ज्ञानी भेदभाव रहित होकर सबको आत्मवत् देखता है । वह किसी से घृणा या द्वेष नही कर सकता है । वह तो सदा सर्वत्र अपने परम प्रभु के दर्शन करता हुआ मन ही मन सबको प्रणाम करता रहता है और सबकी सब प्रकार सेवा करना और उन्हें सुख पहुँचाना चाहता है –

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।

ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ।।

लोक और परलोक को सुधारने वाला ज्ञान है । ज्ञान की महिमा को प्रतिपादित करते हुऐ गीता में श्री कृष्ण ने कहा है –

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमहि विद्यते ।

श्रद्धावाल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।

ज्ञानं लब्धा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।

अतः श्रद्धापूर्वक ज्ञान को प्राप्त कर प्राणियो के हित में रत रहना ही श्रेयस्कर है ।

श्रीमद्भगवदगीता का वचन है कि परमात्मा के सतत ध्यान और अनवरत चिन्तन से मानव का स्वभाव रूपान्तरित हो जाता है । गीता हमें परमात्मा पर ही पूर्ण निर्भर रहने की शिक्षा देती है –

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

अहंत्वा सर्वपापेभ्योः मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।

अर्थात् सब धर्मो का परित्याग करके एक मात्र मेरे शरणापन्न हो जाओं , मैं तुम्हे सब पापों से मुक्त कर दूँगा , तुम सोच मत करो ।

पूर्ण निश्चिन्तता से मार्ग पर चलकर ध्येय तक पहुँचने में भक्ति हमारी पूर्ण सहायता करती है । परमात्मा केवल योगक्षेम का निर्वाह करने वाले ही नहीं अपितु ये भक्त के भी भक्त हैं ।

पर्यावरणीय सन्तुलन बनाए रखने के लिए गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण कहते हैं –

देवान्मावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।।

गीता में निहित शाश्वत जीवन – मूल्यों की प्रासंगिकता सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है –

अमानित्वमम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।

आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्वविनिग्रह ।।

अर्थात् अपने में श्रेष्ठता के भाव का न होना, दम्भाचरण का अभाव , अहिंसा , क्षमा , मन , वाणी की सरलता , गुरू की सेवा , बाह्य एवं अन्तः करण की शुद्धि स्थिरता और आत्म नियंत्रण आवश्यक हैं। श्रीकृष्ण द्वारा अपनाई गई सदाचरण की नीति का पालन हमें निष्ठा पूर्वक करना चाहिए । जहां भगवान श्रीकृष्ण है , वही धर्म है ,जहां धर्म है वहीं विजय है –

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मतिर्मम

भगवद्गीता हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान कराने के साथ ही शताब्दियों से भारतीय मनीषा को इस रूप में परिभाषित करती रही है कि जन सामान्य इसके माध्यम से अपने कर्त्तव्य मार्ग को व्यावहारिकता और उच्चता के मापदण्डों के अनुसार निर्धारित कर सके ।

श्रीकृष्ण हजारों वर्षो से व्यक्ताव्यक्त रूप में भारतीय जनमानस में गहराई तक रचा बसा एक कालजयी चरित्र , एक लीलापुरूष तत्वज्ञानी , महान कथानायक , युग पुरूष हैं। गीता में भगवान् कहते हैं दृ

यद् यद् आचरति श्रेष्ठस्तत्रदेवेतरो जनः ।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।

अर्थात् समाज के श्रेष्ठजन अपने आचरण से समाज के लिए प्रेरक की भूमिका का निर्वाह करता है। वह जैसा व्यवहार करता है उसी को आदर्श मानते हुए सामान्य जन भी उसी प्रकार का आचरण करने लगते हैं । प्रश्न यह है कि श्रेष्ठजन का वह कौन सा आचरण है जिसका अनुसरण करने की आवश्यकता हुई? इसके विश्लेषण के लिए अर्जुन की निराशा , कुण्ठा अथवा पलायन की प्रवृत्ति , इस पर श्रीकृष्ण का कथन उल्लेखनीय है––

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांञ्च भाषसे

गतासूनगताश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ।।

निष्कर्षतः गीता में निहित मूल्य सम्पूर्ण आत्मा को शक्ति , परमशक्ति तथा आनन्दानुभूति प्रदान करते हैं साथ ही विश्वात्म ईश्वर की सन्तान आदि ज्ञान द्वारा विश्व बन्धुत्व , विश्व कल्याण की भावना एवं तदनुकूल व्यवहार हेतु प्रेरित करते हैं । लौकिक जीवन में गीता भौतिक , सामाजिक , आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना के साथ ही विश्व के समस्त मानव समाज को नव चेतना देकर आत्यन्तिक शान्ति प्रदान करती है । अतः गीता को सुगीता बनाना चाहिए , उसका भली भांति सदुपयोग करना चाहिए –

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै शास्त्रसंग्रहै : ।

या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपदमाद्विनिसृता ।।

इस पथ का अनुसरण करने वाला अपने लिए तो निःश्रेयस का द्वार खोल ही लेगा , उसके तपः पूत व्यक्तित्व के प्रकाश में मानव – समाज भी अभ्युदय के पथ पर आरूढ़ हो सकेगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 – श्रीमद्भगवत गीता – गीता प्रेस गोरखपुर

2– श्रीमद्भगवत गीता – व्याख्याकार – डॉ. विश्वनाथ शर्मा

3– संस्कृत – वाङ्मय का बृहद् इतिहास

प्रधान सम्पादक – पद्मभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय , सम्पादक प्रो. व्रज बिहारी चौबे

4 – संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी

5 – संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

6 – प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति – डॉ. राजकिशोर सिंह एवं डॉ. उषा यादव

7– वैदिक संस्कृति और संस्कृत साहित्य का इतिहास – रामानुज तिवारी